डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B. A. Part – 1
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper – 1

Date:- 02-02-2023

Ajanta
Page No.
Date

अँखिया हरि-दरसन की भूखी (भ्रमरगीत)

अँखिया हरि-दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूप रस राची ये बतियाँ सुनि रूखी॥
अवधि गनत इक टक मग जोवत तव एती नहिं झूखी।
अब इन जोग-संदेश उधो अति अकुलानी दूखी॥
बारक वह मुख फेरि दिखाओ दुहि पय पिवत पतूखी।
सूर सिकत हरि नाव चलाओ ये सरिता हैं सूखी॥

प्रसंग:- सूरदास विरचित इस भुक्तक में गोपियाँ अत्यंत दुःखी होकर उद्धव से निवेदन करती हैं कि एक बार हमें गोपीपति कृष्ण के दर्शन करा दो। जो पत्ते के दोने में गाय का दुध दुह कर पी रहा हो।

व्याख्या:- गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव! हमारे नेत्र कृष्ण के दर्शनों के भूखे हैं। ये हमारी आँखें जो रूप में पगी हुई हैं वे किस प्रकार तुम्हारे ज्ञान की निरस बाते सुन कर संतुष्ट होगी? भावार्थ ये है कि हमारी आखों को कृष्ण के दर्शन चाहिए ना कि तुम्हारी उपदेशात्मक बातें।

कृष्ण ने अपने ब्रजागमन की जो अवधि बताई थी हम उस अवधि एकटक राह में पलकों को बिछा कर गिन चुके हैं। लेकिन

अभी तक प्रियतम कृष्ण नहीं आये हैं। हमारी आँखे कृष्ण की प्रतीक्षातुर भी इतनी दुखी नहीं हुई जितनी की इन योग-ज्ञान के संदेशों को सुनकर।

अतः हे ऊधो! हम तुमसे याचना करती हैं कि एक बार कृष्ण स्नेही का मुख पुनः दिखलाओ, जो पत्ते के दोने में गाय का दूध दुह कर पीता था। सूरदास कहते हैं कि गोपियाँ उद्धव से उनके उपदेश की निरर्थकता बताते हुए कहती हैं कि यह हमारी जीवन-रूपी सरिता पर नाव चलाने की हठ मत करो। अर्थात् हम योग मार्ग हेतु पूर्णतः अनुपयुक्त हैं। अतः अपने योग-उपदेश की शिक्षा के प्रसाद बंद करो।

विशेष :-

1. इस मुक्तक में अतृप्ति, असमर्थता, प्रतीक्षा जनित दुःख व्याकुलता और याचना के भाव अत्यंत मार्मिकता से उभरे हैं।
2. विकल्प, चिन्ता, उन्माद आदि संचारी भाव।
3. स्मरण, निदर्शना एवं रूपकातिश्योक्ति अलंकार है।
4. वल्लभ संप्रदायी पुष्टिमार्गी विचारधारा परिलक्षित हैं।
5. राग धनाश्री।